हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान , शिमला में वन-महोत्सव का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 14.08.2015 को संस्थान के आवासीय परिसर में 66वें वन-महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका शुभारम्भ संस्थान के निदेशक, **डॉ. वी. पी, तिवारी** ने बुरांस का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया ।

इस अवसर पर अपने संबोधन में **डॉ. तिवारी** नें कहा कि जुलाई 1947 में वृक्षारोपण अभियान के साथ वृक्षोत्सव की शुरुआत हुई। अब प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में वन-महोत्सव मनाया जाता है, जिसकी शुरुआत वर्ष 1950 में भारत के तत्कालीन कृषि मंत्री डॉ. के. एम. मुंशी ने लोगों में वनों के सरंक्षण व संवर्धन के प्रति उत्साह पैदा करने के लिए की थी । । उन्होंने आगे कहा कि वृक्ष ग्लोबल वार्मिंग को रोकने व प्रदूषण नियंत्रण में सहायक होते है और वन महोत्सव के माध्यम से लोगों को पौधे लगाने की प्रेरणा मिलती है। ।

डॉ. तिवारी ने कहा कि वन महोत्सव का मूल उद्देश्य है कि भारत का प्रत्येक नागरिक वन-महोत्सव सप्ताह के दौरान पौधा लगाये । उन्होंने सुझाव दिया कि पौधारोपण की सफलता के लिए हमें देशी प्रजातियों को प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि यह प्रजातियाँ स्थानीय जलवायु में सुगमता से विकसित होती हैं और वहां पर पाए जाने वाले पक्षियों, कीटों व पशुओं के काम आती है । इसके अतिरिक्त इन वृक्षों से इमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी व पशु-चारा के साथ-साथ भू-संरक्षण एवं सौन्दर्यकरण जैसे लाभ भी प्राप्त होते हैं।

संस्थान के समूह समन्वयक (शोध), **डॉ. कुलराज सिंह कपूर** ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि वनों की उपयोगिता हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विभिन्न तरह की प्राकृतिक आपदाओं से जैसे भूस्खलन , सूखा, बाढ़ आदि से बचने में वृक्ष हमारी सहायता करते हैं। आज के समय में बढ़ती आबादी के चलते वनों को भारी दबाव पड़ रहा है । पर्यावरण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित हो रहा है। जिसके चलते आम आदमी कई तरह की बीमारियों का शिकार हो रहे हैं ।

इस अवसर उन्होंने आगे कहा कि वृक्षों का हमारे जीवन में धार्मिक दृष्टि से भी बहुत महत्व है । हिमाचल प्रदेश में बहुत से वनों को देव-वनों के रूप में भी सहेजा जाता है । वन महोत्सव का आयोजन किये जाने का उद्देश्य यही है कि ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाये जायें। वृक्षों के लगाने से पर्यावरण संतुलित हो सकता है ।

डॉ. **रणजीत सिंह, वैज्ञानिक** ने इस अवसर को पंजाबी परिदृश्य के साथ जोड़ते हुए कहा की बरसात के दो महीनों, जुलाई एवं अगस्त (सावन) को बहुत ही शुभ माना जाता है क्योंकि बरसात में जो भी पौधे या फसलें लगाई जाती हैं वे किसी और ऋतु में लगाई गई फ़सल की अपेक्षा अधिक कामयाब होते हैं । उन्होंने आगे कहा कि वृक्षारोपण का कार्य एक महान कार्य है, जिसमें हम सभी को अपना योगदान सुनिश्चित करना चाहिए ।

डॉ. संदीप शर्मा, **वैज्ञानिक** ने अपने संबोधन में सफल वृक्षारोपण हेतु तकनीकी पहलुओं के बारे में महत्वपूर्ण एवं विस्तृत जानकारी दी, जिसकी उपस्थित समुदाय ने अत्यधिक सराहना की ।

अंत में कार्यक्रम के संयोजक, **श्री प्रदीप भारद्वाज,** विस्तार अधिकारी नें व न महोत्सव के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला और इस अवसर पर उपस्थित सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारियों का धन्यवाद किया ।

वन-महोत्सव की झलकियाँ

वन हैं तो हम हैं
वरना जीवन के दिन कम हैं